ISSN: 3107-3557 (Online)

हिंदी उपन्यास एवं अन्य गद्य विधाएँ: एक समीक्षा

Dr. K. M. Trivedi
Associate Professor in Hindi
Smt. B. V. Dhanak College, Bagasara

हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में जिन नवीन विधाओं का तीव्र गति से विकास हो रहा है उनमें उपन्यास सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। भारत वर्ष में 'उपन्यास' शब्द का सर्व प्रथम प्रयोग संस्कृत के साहित्याचार्य भरत मुनि के 'नाटयशास्त्र' नामक ग्रंथ में किया गया है। आज उपन्यास बहुत लोकप्रिय विधा है। इनके अंतर्गत वास्तविक जीवन के प्रतिनिधित्व का दावा करने वाले पात्रों और कार्यों का चित्रण किया जाता है। हिन्दी में यह शब्द बंगला भाषा से लाया गया है। बंगला में 'उपन्यास' शब्द अंग्रेजी शब्द नोवेल (Novel) के पर्याय के रूप में प्रस्तुत होता है। उपन्यास का अर्थ वहाँ 'नवीन' होता है। गुजराती भाषा ने अंग्रेजी शब्द के आधार पर 'नवलकथा' शब्द गढ़ लिया है। मराठी में उपन्यास को 'कादम्बरी' कहते हैं। यह एक व्यक्तिवाचक नाम को जातिवाचक बनाने का अच्छा उदाहरण है। "हिन्दी साहित्य में 'उपन्यास' शब्द का प्रयोग उपन्यास के रूप में होता है। उप-निकट, न्यास-रखना अर्थात् सामने रखना। इसके द्वारा उपन्यासकार पाठक के निकट अपने मन की कोई विशेष बात, कोई नवीन मत रखना चाहता है-"[१]

आधुनिक युग में गद्य का बहुमुखी विकास हुआ है। उपन्यास वर्तमानकाल के गद्य की सर्वाधिक लोकप्रिय एवं प्राणवान विधा के रूप में जानी जाती है। इसका कारण उपन्यास का मानव जीवन के यथार्थ से धनिष्ठ सम्बन्ध है। "मनुष्य के जीवन की झांकी उसके चरित्र की विविध परिस्थितियों में प्रतिक्रियात्मक सम्भावनाओं का जितना सफल उद्घाटन इस साहित्यिक माध्यम द्वारा किया जा सकता है उतना अन्य साहित्यिक विधाओं द्वारा नहीं। आधुनिक युग में उपन्यास की लोकप्रियता एवं सर्वाधिक महत्त्व का कारण भी यही है।[२] वैज्ञानिक और आर्थिक संक्रान्ति के साथ ही सामाजिक और मानव-मूल्यों का जो ह्रास और विघटन हुआ है, उनका यथार्थ प्रतिबिम्बन उपन्यास में ही हो सकता है। जीवन के अनेक मधुर-कटु अनुभव संपूर्णता के साथ उतारे जा सकते हैं। "उपन्यास मानव जीवन के विविध पक्षों को समग्र रूप से चित्रित करनेवाला एक ऐसा साहित्यिक रूप है, जो अपने पूर्व की कई साहित्यिक परंपराओं को आत्मसात करते हुए भी अभिनव आकर्षण के साथ प्रकट हुआ ।[३]

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद मानव जीवन में अचानक जो विषमताएँ उत्पन्न हुई उससे जीवन जटिल और दुरुह बन गया। परिणाम स्वरूप धार्मिक एवं सास्कृतिक मूल्य विघटित होने लगे और आज हम खतरनाक युग में विचरने लगे हैं जहाँ एक क्षण भी भय और संत्रास से सुरक्षित नहीं हैं। भले ही हम इसे प्रकृत्ति पर विजय पाने, वैज्ञानिक प्रगति और आर्थिक उन्नति के कारण सभ्यता का विकास कह लें। किन्तु यह निश्चित है कि हम मानवता के साथ मानव के मौलिक अधिकारों, मानव मूल्यों यहाँ तक कि मानव की भी जड़ काटते जा रहे हैं। अतः युगीन जीवन की जटिलता और विषमता को समग्र और सर्वांग रूप में ठीक-ठीक रूपायित करने के लिए कथा-साहित्य के अतिरिक्त और कोई भी विधा समर्थ नहीं हो रही है। अतः कहा जा सकता है कि "जिस प्रकार पद्य में महाकाव्य तथा दृश्य काव्य में नाटक जीवन के अनेक पक्षों को उजागर करता है, उसी प्रकार कथा-साहित्य में उपन्यास जीवन का सर्वांगीण निरीक्षण करने में समर्थ है।[४] इस सम्बन्ध में डॉ.शंकरवसंत मुद्गल लिखते हैं कि "आधुनिक

साहित्य में पद्य के अंतर्गत महाकाव्य और गद्य के अंतर्गत उपन्यास का स्थान सर्वोपरि है ।[५]

आज विश्व की लगभग सभी भाषाओ में उपन्यास का प्रचार प्रचुर मात्रा में मिलता है। उपन्यास का मुख्य उद्देश्य जीवन को सम्पूर्णता एवं व्यापकता से प्रस्तुत करना है। वास्तविक जीवन की अनेक बातों को कल्पना के रंग में रंगकर अत्यंत आकर्षक ढंग से व्यक्त किया जाता है। इस प्रकार मनुष्य का विविधरंगी जीवन उपन्यास में प्रतिबिम्बित होता है। साथ ही उपन्यास में तत्कालीन युग की झाँकी के दर्शन होते हैं। उपन्यास का सत्य यथार्थ जीवन सत्य से अधिक सच्चा और स्वाभाविक होता है। इस तरह कहा जा सकता है कि उपन्यास में हम जीवन पढ़ते हैं और वास्तविक जीवन में सच्चे उपन्यास के दर्शन करते हैं। उपन्यास की श्रेष्ठता को स्वीकार करते हुए डॉ. प्रताप नारायण टंडन कहते हैं-"प्राचीन युग में महाकाव्य को साहित्य के विविध माध्यमों में जिस प्रकार से सर्वोपरि स्थान प्राप्त था, उसी प्रकार उपन्यास का महत्त्व निर्देशित करते हुए उसे भी आधुनिक जीवन का महाकाव्य कहा गया। उपन्यास के अस्तित्व तथा महत्त्व के प्रसार का मूल कारण यही माना गया कि मनुष्य के जीवन का समग्रता के साथ प्रतिनिधित्व करने में उपन्यास सक्षम हैं।"[६]

डॉ.हजारी प्रसाद द्विवेदी भी उपन्यास की श्रेष्ठता प्रतिपादित करते हुए लिखते हैं कि- "उपन्यास आधुनिक युग का महाकाव्य है।" क्योंकि उसमें मानव-जीवन और मानव-चरित्र का चित्रण उपस्थित किया जाता है। वह मनुष्य के जीवन और चरित्र की व्याख्या करता है, और उनका उद्घाटन करता है। वे उपन्यास को हिन्दी-साहित्य के लिए एक नई वस्तु मानते हुए लिखते हैं-'उपन्यास इस युग का बहुत ही लोकप्रिय साहित्य है।' शायद ही कोई पढ़ा-लिखा नौजवान इस जमाने में ऐसा मिले जिसने दो-चार उपन्यास न पढ़े हों। यह बहुत मनोरंजक साहित्यांग माना जाने लगा है। आजकल जब किसी पुस्तक को बहुत मनोरंजक पाया जाता है तो प्रायः कह दिया जाता है कि इस पुस्तक में उपन्यास का एकमात्र गुण उसकी मनोरंजकता को ही माना है। इस साहित्यांग (उपन्यास) ने मनोरंजन के लिए लिखी जाने जाली कविताओं का ही नहीं, नाटकों का भी रंग फीका कर दिया है क्योंकि पाँच मील दौड़कर रंगशाला में जाने की अपेक्षा पाँच-सौ मील दूर से किताब मँगवा लेना कहीं आसान हो गया है, जो अपना रंगमंच अपने पन्नों पर ही लिए हुए है।"[७] डॉ.त्रिभुवन सिंह भी उपन्यास को आधुनिक युग का महाकाव्य मानते हुए कहते हैं, "कविता के क्षेत्र में जो स्थान महाकाव्य का है, गद्य के क्षेत्र में वही स्थान उपन्यास का है।"[८]

इस तरह आज भारतीय विद्वानों की दृष्टि में उपन्यास आधुनिक युग का महाकाव्य माना गया है। शिवदानसिंह चौहान उपन्यास की महत्ता के विषय में लिखते हैं –"विद्वानों ने उसे (उपन्यास को) आधुनिक युग का महाकाव्य बताया है, इसलिए कि इस रूप-विधान के अंतर्गत रचनाकार को आधुनिक युग की संश्लिष्ट वास्तविकता के अनुरूप ही विषय वस्तु, कथानक, चरित्र-चित्रण और व्यक्ति पात्रों की मनोवैज्ञानिक स्थितियों और प्रतिक्रियाओं आदि की संश्लिष्ट और मूर्त योजना करके समग्र जीवन को कलात्मक रूप से प्रतिबिम्बित करने का एक ऐसा सरल साधन या माध्यम प्राप्त हुआ है, जिसके क्षेत्र और संभावनाएँ अपरिसीमित है।"[९] वेबस्टर ने अपनी परिभाषा में उपन्यास के यथार्थ जीवन के चित्रण की ओर संकेत करते हुए लिखा है, "उपन्यास गद्यमय आख्यान अथवा उचित आकार का वृत्त है, जिसके कथानक में यथार्थ जीवन के प्रदर्शन का प्रयत्न करने वाले और उनके कार्यों का चित्रण होता है।"[१०]

ISSN: 3107-3557 (Online)

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि उपन्यास जीवन के विविध अनुभवों का निचोड़ है। वह मनोरंजन के साथ-साथ मानव-हृदय का संस्कार भी करता है। इसमें अतीत की प्रतिध्वनि, वर्तमान का प्रतिबिम्ब और भविष्य का संकेत होता है। इन्हीं सब कारणों से मानव जीवन का गद्यमय आख्यान या आत्म-प्रकाशन होने वाली यह विधा अन्य सभी साहित्यिक विधाओं से अधिक ग्राह्य एवं अधिक लोकप्रिय है। इसकी लोकप्रियता के संबंध में डॉ.हजारीप्रसाद द्विवेदी के कथन अक्षरशः सत्य प्रतीत होते हैं। उनके अनुसार "आज के जमाने में उपन्यास एक ही साथ शिष्टाचार का समुदाय, बहस का विषय, इतिहास का चित्र और पॉकेट का थियेटर है।"[११]

कहानी और उपन्यास :

कहानी और उपन्यास एक ही वर्ग की विधाएँ है। कहानी और उपन्यास दोनों की आत्मा समान है। कथानक के बिना न कहानी लिखी जाती है और न पूरे जीवन से सम्बन्ध रखता है, जबकि उपन्यास । उपन्यास का कथानक कहानी में जीवन का एक पहलू, एकाध घटना या, एक पक्ष को लिया जाता है। उभरती हुई कथावस्तु प्रस्तुत करके उसे सुलझाने का अवसर उपन्यास को प्राप्त है। कहानी में सीधी सरल कथावस्तु का ही वर्णन होता है। परंतु उपन्यास का कथानक इधर-उधर की बातों को समेटता हुआ मंद गति से अपने उद्देश्य तक पहुँचता है। कहानी उपन्यास की अपेक्षा अधिक सीमित होती है। अतः इसमें कथाएँ मिलती हैं। उपन्यास में पात्र के स्वभाव की सूक्ष्म झाँकियाँ विविध प्रासंगिक कथाओं की योजना नहीं होती। उपन्यास में हमें अनेक प्रासंगिक घटनाओं के माध्यम से हमारे सामने उपस्थित होती हैं। कहानी और उपन्यास में होने वाला भेदाभेद केवल यही है कि "उपन्यास यदि महासागर तो कहानी एक सुन्दर, सजा हुआ तथा कमल पुष्पाच्छादित सरोवर हैं। वह चाहे थोड़ी देर के लिए हमारा मन अपनी और आकर्षित भले ही कर ले किन्तु गहनता, विस्तार, अपार जलराशि आदि की उपलब्धि समुद्र में ही संभव हैं।"[१२]

जीवनी और उपन्यास :

जीवनी लिखते समय केवल वास्तविकता का निर्वाह किया जाता है। काल्पनिक तथा अवास्तविक बातें जीवन का मूल्य तथा सौंदर्य भी कम कर देती हैं। उपन्यास में रोचकता लाने के लिए आदर्श और कल्पना यथार्थ का साथ देते हैं। जीवनी लिखने की परम्परा बहुत ही पुरानी है। उसका साहित्य सृजन कम होने के कारण वह नयी है। किसी भी भाषा के साहित्य में मनुष्य ही केन्द्रबिन्दु है। जीवनी साहित्य की वह विधा है जिसमें अंतः बाह्य स्वरुप का कलात्मक निरूपण है। जीवनी लेखक किसी की जीवनी लिखते समय सच्चाई को नहीं छोड़ सकता। "हिन्दी के जीवनी कारों के रूप में बनारसीदास चतुर्वेदी, वल्लभदास सत्यदेव, विद्यालंकार, रामवृक्ष बेनीपुरी, डॉ. रांगेय राघव आदि ने जीवनी साहित्य के प्रति रुचि जागृत कर अपना योगदान दिया है।"[१३]

आत्मकथा और उपन्यास :

आत्मकथा साहित्य की एक सरल संस्मरणात्मक विधा है। संस्मरणात्मक होते हए भी वह संस्मरण विधा से भिन्न है। आत्मकथा में लेखक जीवन का एक श्रृंखला बद्ध ऐसा विचरण होता है। जिसमें वह अपने विशाल जीवन सामग्री की पृष्ठभूमि में से कुछ महत्त्वपूर्ण बातों को लेकर उनको व्यवस्थित ढंग से सामने रखता है या फिर अपनी अन्तः दृष्टि से उनको संस्मरण के रूप में प्रस्तुत करता है।

हिन्दी में आत्मकथा लेखक के जीवन की दुर्बलताओं-सबलताओं आदि का वह संतुलित और व्यवस्थित चित्रण है जो उसके संपूर्ण व्यक्तित्त्व के

निष्पक्ष उद्घाटन में समर्थ होता है। वैसे हिन्दी में आत्मकथा साहित्य बहुत कम लिखा गया है। जो कुछ साहित्य उपलब्ध हैं, उसको हम प्रवृत्ति गत विभिन्नताओं के आधार पर निम्नलिखित वर्गों में बाँट सकते हैं।

(1) धार्मिक प्रवृत्ति प्रधान व्यक्तियों की आत्मकथाएँ

(2) राजनीतिक प्रवृत्ति प्रधान व्यक्तियों की आत्मकथाएँ

(3) कलाकार के जीवन की आत्मकथाएँ।

"हिन्दी आत्मकथाकारों में प्रमुख हैं वियोगी हरी, हरीऔध उपाध्याय, महात्मा गाँधी, पंडित नेहरू, डॉ.राजेन्द्र प्रसाद, देवेन्द्र सत्यार्थी, कन्हैयालाल मुंशी, बाबू गुलाबराय आदि। हिन्दी में वैसे तो यह साहित्य भी बहुत कम विकसित है।"

एकांकी और उपन्यास :

प्रसादोत्तर युग में एकांकी कला का बहुत ही अच्छा विकास हुआ है। अनेक सफल कलाकार उदित हुए है, जिन्होंने सुन्दर एकांकी नाटक की रचना की है। इनमें से कुछ लेखकों ने एकांकी के शास्त्रीय रूप भी स्पष्ट करने का प्रयास किया है। डॉ.रामकुमार वर्मा का एकांकी के संदर्भ में अभिमत है कि "एकांकी में एक ही घटना होती है, और वह घटना नाटकीय कौशल से ही कौतूहल का संचय करते हुए चरमसीमा तक पहुँचती हैं, इसमें प्रधान प्रसंग ही रहता है। एक-एक वाक्य और एक-एक शब्द प्राण की तरह आवश्यक रहते हैं। पात्र चार या पाँच ही होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति की रूपरेखा पत्थर पर खींची हुई रेखा की भाँति स्पष्ट और गहरी होती है। कथावस्तु भी स्पष्ट और कौतुहल से परिपूर्ण रहती हैं।"

हिन्दी एकांकी के सन्दर्भ में इसी प्रकार के विचार पड़ित सद्गुरु अवस्थी, शेठ गोविंददास, उपेन्द्रनाथ अश्क, डॉ. खत्री, डॉ. राजेन्द्रनाथ आदि के हैं। नाटक के समान एकांकी के भी तत्त्व माने गए हैं। कथावस्तु, चरित्र-चित्रण कथोपकथन, संकलनत्रय, दृश्यविधान, भाषा-शैली, अभिनेयता आदि हैं। हिन्दी एकांकीयों को निम्नलिखित भागों में बाँटा जा सकता है।

(१) भारतेन्दुकालीन प्राचीन ढंग के एकांकी

(२) द्विवेदीकालीन एकांकी

(३) प्रसादकालीन एकांकी

(४) प्रसादोत्तरकालीन कलात्मक एकांकी

प्रसादोत्तरकालीन एकांकीकारों में डॉ.रामकुमार वर्मा, भूवनेश्वर प्रसाद, उदयशंकर भट्ट, उपेन्द्रनाथ अश्क, विष्णु प्रभाकर, रामवृक्ष बेनीपुरी, जगदीशचन्द्र माथुर, लक्ष्मीनारायण मिश्र, वृंदावनलाल वर्मा, हरिकृष्ण प्रेमी आदि प्रमुख है।

नाटक और उपन्यास :

पूराने जमाने में जो स्थान नाटक का था, वही स्थान आज के युग में उपन्यासों का है। उपन्यास आज बहुताधिक लोकप्रिय गद्य विधा है। वैसे तो उपन्यास श्रव्य काव्य है। जिसका आनन्द केवल पढ़कर ही उठाया जा सकता है। परंतु नाटक दृश्य-श्रव्य दोनों के अन्तर्गत आता हैं। जिसका मज़ा पढ़कर तथा देखकर लिया जाता है। फिर भी उपन्यास में कुछ ऐसी विशेषताएँ मिलती है, जो नाटक में नहीं हैं।

नाटक में किसी भी कथा को संवादों के माध्यम से, पात्रों के क्रिया कलापो द्वारा रंगमंच पर प्रस्तुत किया जाता है। उपन्यास में वर्णन द्वारा ही कथावस्तु प्रस्तुत की जाती है। अतः जो बन्धन नाटककार पर होते हैं वह उपन्यासकार पर नहीं है। उपन्यासकार अपनी इच्छानुसार कथा का विकास कर सकता है। नाटक का विकास करते समय नाटककार को दर्शक तथा रंगमंच का विचार करना पड़ता है। उपन्यास की कोई शास्त्रीय मर्यादा नहीं होती, जो नाटको में होती है। नाटककार को जो कुछ भी कहना होता है वह पात्रों के माध्यम से कहना पड़ता है। परंतु आवश्यकता के अनुसार उपन्यासकार पाठकों के

समाने उपस्थित होकर अपनी बात कह सकता हैं। उपन्यास का मज़ा व्यक्ति अपनी मर्जी के अनुसार समय तथा स्थान को देखकर उठा सकता है। उपन्यास रेलगाड़ी, बिस्तर और बगीचे में भी पढ़ा जा सकता है। उसमें समय और स्थान का भी कोई प्रतिबंध नहीं फिर भी वह नाटक जैसा आनन्द देता है। इसलिए उपन्यास को पोकेट थियेटर भी कहा जा सकता है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि गद्य की विविध विधाओं में उपन्यास विधा अत्यंत लोकप्रिय है। गद्य की लगभग सभी विधाओं का समाहार उपन्यासों में होता है। जीवन के अनेक मधुर-कटु अनुभवों को संपूर्णता के साथ उसमें उतारे जा सकते हैं। "उपन्यास मानव जीवन के विविध पक्षों का ऐसा साहित्य रूप हैं जो अपने पूर्व की कई साहित्यिक परम्पराओं को आत्मसात करते हुए भी अभिनव आकर्षण के साथ प्रकट हुआ है।[१४]

संदर्भ सूची :

1. व्यास, डॉ.श्यामसुन्दर, वीणा (पत्रिका), मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति इन्दौर, जुलाई, सन् 2006 ई., पृ. 28
2. टंडन, डॉ.प्रताप नारायण, हिन्दी उपन्यास कला, हिन्दी समिति लखनऊ, संस्करण- सन् 1965 ई., पृ. 22
3. तिवारी, डॉ.रमेश, हिन्दी उपन्यास का सांस्कृतिक अध्ययन इलाहाबाद, रचना प्रकाशन, सन् 1972 ई.,पृ.38
4. महेता, डॉ.आशा, हिन्दी गद्य साहित्य का विकास, भारतीय ग्रंथ निकेतन दिल्ली, सन् 1965 ई., पृ.63
5. मुद्गल, डॉ.शंकर वसंत, हिन्दी के महाकाव्यात्मक उपन्यास, चन्द्रलोक प्रकाशन कानपुर, सन् 1962 ई., पृ.18
6. टंडन, डॉ.प्रताप नारायण, हिन्दी उपन्यास कला, हिन्दी समिति लखनऊ, संस्करण- सन् 1965 ई., पृ.20
7. टंडन, डॉ.प्रताप नारायण, हिन्दी उपन्यास उद्भव और विकास, कल्पकार प्रकाशन लखनऊ, सन् 1974 ई., पृ.12/13
8. डॉ.त्रिभोवनसिंह, हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी, सन् 1965 ई., पृ.40
9. चौहाण, शिवदानसिंह, हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, सन् 1961 ई., पृ.163
10. न्यू इंटरनेशनल डिक्शनरी ऑफ इंग्लिश लेग्वेंज वेबस्टर, 'सारिका' पत्रिका से उद्धृत दिल्ली, सन् 1980 ई., पृ.63
11. द्विवेदी, डॉ.हजारी प्रसाद, साहित्य का साथी, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा, सन् 1962 ई., पृ.75
12. टंडन, डॉ.प्रताप नारायण, हिन्दी उपन्यास उद्भव और विकास, कल्पकार प्रकाशन लखनऊ, सन् 1974, पृ.11
13. महेता, डॉ.आशा, हिन्दी गद्य साहित्य का विकास, भारतीय ग्रंथ निकेतन दिल्ली, सन् 1965 ई., पृ. 14
14. तिवारी, डॉ.रमेश, हिन्दी उपन्यास का सांस्कृतिक अध्ययन, रचना प्रकाशन इलाहाबाद, सन् 1972 ई., पृ. 34